वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

दिसम्बर 2022

देवात्मा – अंक

भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका घोर तप और अद्वितीय त्याग, सत्य धर्म शिक्षा और विश्व का परम कल्याण

देवात्मा अंक

देवात्मा अंक में हम हमारे पाठकों के लिए निम्नलिखित विषय पेश कर रहे हैं :-
भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका घोर तप और अद्वितीय त्याग, सत्य धर्म शिक्षा और विश्व का परम कल्याण।

भजन और शुभ कामना

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव 7, 8, 9, 10 दिसम्बर 2022 ई. दिन बुध, वीर, शुक्र और शनिवार को होगा। उनके संबंध में आरम्भिक दिन 9 नवम्बर 2022 को है। आरम्भिक दिन से लेकर महोत्सव तक हमारे पाठक निम्नलिखित पुस्तकों के पाठ से विशेष लाभ उठा सकते हैं - जिन्होंने अब तक न पढ़ी हों, वह अब शुरू करें, कृपा होगी।

1-मुझ में देव जीवन का विकास खंड 1, 2
2 - अद्वितीय त्याग 1-7 खंड
3 - आत्म परिचय
4 - आत्म कथा
5 - मेरी विशेषता
6 - गुरू और शिष्य तत्व

देव वाणी :

"महोत्सव इस पृथ्वी में एक सच्चा और अद्वितीय तीर्थ स्थापन हुआ है, कि जिस पर पहुंचकर हर एक अधिकारी आत्मा जो हित लाभ करता है, उसका दृष्टान्त इस पृथ्वी में कहीं नहीं है, और इस महोत्सव पर पहुंचने के लिए वह जिस कदर खर्च करता है, या जो कोई तकलीफ़ उठाता है, उसकी यहां पहुंचकर जैसी सफलता होती है, वह किसी और तरह से नहीं होती और नहीं हो सकती। देवात्मा के जन्म महोत्सव पर पहुंचना प्रत्येक देव समाजी का विशेष और बड़ा कर्तव्य है। देवात्मा ने जो देव समाज स्थापन की है, वह भी इस दुनिया में एक अद्वितीय हितकर समाज है। उसको प्यार करो और उसको अपना समझो और अपनी इस प्यारी समाज और उसकी इन्स्टीटयूशनों की उन्नति के लिए अपने तन, अपने मन और अपने धन का त्याग करना अपना बहुत बड़ा अधिकार और मनुष्य जन्म की सफलता समझो।"

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 12
दिसम्बर 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका घोर तप और अद्वितीय त्याग, सत्य धर्म शिक्षा और विश्व का परम कल्याण

भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य : नेचर ने अपने विकासक्रम में पशु जगत से मनुष्य जगत को प्रगट किया है। नेचर की मेहरबानी से मनुष्य पशु जगत की अपेक्षा बहुत तेज और सदा विकसित होने वाली मानसिक शक्तियों का स्वामी बन गया। परन्तु आत्मा की अपूर्ण गठन के कारण, मनुष्य ने अपनी तेज मानसिक शक्तियों से विश्व के विभिन्न विभागों में जहां विकास किया है वहां सारी नेचर में तबाही और दुख का तुफान खड़ा कर दिया। मनुष्य ने धर्म के नाम पर पूर्ण विज्ञान रहित, मात्र कल्पना पर आधारित धर्मों के बड़े–2 भवनों का निर्माण कर लिया। अपने नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से सारी मानव जाति में हाहाकार मचा दी। मानव की इस महा हानिकारक दशा को मिटाने के लिए इस नेचर में एक ऐसे आत्मा की ज़रूरत थी कि जो सुख के स्थान पर शुभ का, मिथ्या के स्थान पर सत्य का प्रेमी हो। जो ऐसी ज्योति का प्रकाश करे कि जिससे मानव जगत का आध्यात्मिक अन्धेरा दूर हो। जो ऐसे तेज का प्रकाश करे कि जिससे झूठ और बुराई के राज का नाश हो और उसके स्थान पर सत्य और शुभ का राज स्थापन करे। नेचर के खास इन्तजाम से वो अद्वितीय ज्योति और तेज से सम्पन्न आध्यात्मिक सूर्य का जन्म 20 दिसम्बर 1850 ई. पौषवदि प्रतिपदा सम्वत् 1907 वि. को श्री अकबरपुर जिला कानपुर (भारत) में हुआ। नेचर ने भारत में ऐसे देवात्मा को प्रगट किया जो सारी मानव जाति से अलग देव बोध लेकर आए थे। वो सत्य का पूर्ण प्यार लेकर आए थे और अपने जीवन की प्रत्येक गति में सत्य की सदा पैरवी करते रहे हैं। वो शुभ का पूर्ण प्यार लेकर आए थे इसलिए सदा शुभ का साथ देते रहे हैं। इन सत्य और शुभ के प्रेम की निराली देव शक्तियों ने उनका निराला ही लक्ष्य बना दिया। वो सारे विश्व में सत्य–शुभ का राज लाने के लिए बेबस हो गए और 32 वर्ष की आयु में सत्य–शुभ और सुन्दर के प्रेम और सारे जग के कल्याण का जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए तैयार हो गए।

लाहौर में एक बड़ी सभा करके कि जिसमें

भगवान गेरवे वस्त्र धारण करके पधारे थे, भगवान ने निम्नलिखित पद गाकर अपना जीवन व्रत ग्रहण किया –

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे;
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।"

जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद गुरू महाराज ने जो भाव प्रकाश किया था उसके कुछ अंश हम नीचे दर्ज करते हैं –

"आज का यह दृश्य बिल्कुल निराला है। मेरा व्रत भी पूर्णत: अनोखा है। मैं इस समय अपने आपको इस नए रूप और नई पोशाक में, एक दुल्हन की तरह देखता हूं कि जो इस भरी सभा में सैकड़ों जनों के सन्मुख सारी आयु के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होकर अपने लिए विवाह बन्धन अथवा विवाहव्रत को ग्रहण करती है – हां, आज मैंने अपना एक और परन्तु बिल्कुल अनोखा व्याह रचाया है। यह पतिव्रता स्त्री जिस प्रकार अपने पति के साथ विवाह सूत्र में बन्धकर, उसे अपने सब सम्बन्धियों से बढ़कर अर्थात् मुख्य सम्बन्धी बनाती है, और अपने जीवन की सब प्रकार की सैकड़ों अनुकूल और प्रतिकूल घटनाओं में अपने उस मुख्य व्रत से विचलित नहीं होती, और दुख और सुख में, विपद् और सम्पद् में, स्वास्थ्य और रोगावस्था में, समृद्धि और दरिद्रता में, हर्ष और शोक में, जवानी और बुढ़ापे में, सुन्दरता और कदर्यता (करूपता) में, भय और प्रलोभन में, अपने व्रत में सच्ची रहकर केवल उसी एक को अपने हृदय में सब से बढ़कर सन्मान देती है, उसके लिए सदा वफ़ादार रहती है, दिल 2 में भी कभी उससे असती व बेवफ़ा नहीं बनती उसी प्रकार मैंने आज अपने परम लक्ष्य, अर्थात् महा सुन्दर सत्य और शिव वा हित के प्रचार के सम्बन्ध में जो गठजोड़ किया है, उसके लिए आयु भर अपने जीवन की आन्तरिक और बाह्यक प्रत्येक क्रिया में सच्चा रहूं। मैं अपने इस परम लक्ष्य का पूर्ण अनुरागी होकर जग के उपकार में ही अपनी सारी आयु व्यतीत करूं।

सकल जगत् के सम्बन्ध में उपकार व्रत को ग्रहण करके मेरे लिए संसार में रहना और मनुष्यों के नाना सम्बन्धों में, जहां 2 और जिस 2 प्रकार का असत्य और अहित अथवा मिथ्या और पाप का राज्य फैला हुआ है, उसके नष्ट करने के लिए संग्राम करना, और उनके स्थान में सत्य और हित को उत्पन्न और स्थापन करना, एक लाजमी बात है। इसीलिए इस देश के लाखों स्वार्थ परायण साधुओं वैरागियों, सन्यासियों, और फ़कीरों की तरह अपने नाना सम्बन्धियों और उनके सम्बन्ध में नाना उचित कर्तव्य कर्मों का त्याग मेरा त्याग नहीं, किन्तु मिथ्या और अन्य पाप अनुरागी आत्माओं ने मिथ्या और अन्य पापों के द्वारा जो कुछ घोर नरक फैला रखा है, और निकट से निकट के सम्बन्धों को भी परस्पर के लिए नाना प्रकार से हानिकारक बना रखा है, और जीवन्त धर्म से रहित होकर अधर्म को उच्च अधिकार दे रखा है, जिससे सब प्रकार के सम्बन्धों में नाना प्रकार का निदारुण दु:ख और क्लेश छाया हुआ है, और हाहाकार और आर्तशब्द निकल रहा है, उनके आत्माओं को बदलकर पापावस्था से निकालने और उनमें धर्म जीवन उत्पन्न करने के लिए अपने इस महा कठिन व्रत और महा कठिन संग्राम में मुझे जिस कदर धन,

मान, बड़ाई इज्जत, सुख, आराम, स्वास्थ्य और बल आदि के त्याग करने की जरूरत है, वह सब त्याग ग्रहण करना मेरे लिए उचित और विधेय होगा। अपने परम लक्ष्य की सिद्धि के लिए यही सब प्रकार का पूर्ण त्याग, मेरा सच्चा सन्यास होगा।"

इस भाव प्रकाश ने अधिकांश दिलों को हिला दिया। कितने हि स्त्री और पुरुष रोते और आंसू बहाते थे।

इस्तीफा देने के बाद और जीवन व्रत ग्रहण करने पर भगवान क्या महसूस करते हैं उनकी देव वाणी यह है

"इस्तीफ़ा दे चुकने के बाद से हि मेरे हृदय में बहुत उच्च प्रभाव लाभ करने शुरू कर दिये थे। व्रत सम्बन्धी अनुष्ठान के सम्पन्न हो जाने पर मैं बिल्कुल एक नये लोक में पहुंच गया। मेरे सब उच्च भाव बहुत सतेज और सबल हो गए। मुझ में नई ज्योति प्रकाशित हुई। जैसे एक 2 कैदी क़ैद की मियाद के खत्म होने और बेड़ियों के कटने पर अपने आपको स्वाधीन और सुखी अनुभव करता है, वैसे हि मैंने अपने आपको, न केवल स्वाधीन और सुखी किन्तु उससे सैकड़ों गुणा बढ़कर कृतार्थ बोध किया। एक मछली जो पानी से बाहर किसी सूखी जमीन पर पड़ी हो, वह वहां से निकलकर और पानी में प्रवेश करने का अवसर पाकर अपने आपको जिस प्रकार सुरक्षित अनुभव करती है, उसी प्रकार मैंने अपने आपको अनुभव किया। विश्व की जो विकासकारी प्रकृति इस शुभ घटना के लाने के लिए, लाखों वर्ष से संग्राम कर रही थी, उसके प्रत्येक विभाग ने मानो सहत्र 2 मुख से मुझ पर अपना आशीर्वाद दिया। और इस गुप्त परन्त महान् आशीष को पाकर मेरा हृदय धन्य - धन्य होकर उछलने लगा, और निर्मल और उच्च अनन्द की अपूर्ण लहरें लेने लगा। मैंने अनुभव किया कि अब मेरे जन्म लेने का महान् उद्देश्य, एक सीमा तक सफल हुआ।"

परम लक्ष्य की सिद्धि के लिए अद्वितीय तप त्याग और उत्पीड़न

भगवान देवात्मा जीवनव्रत ग्रहण करने के अनन्तर अपने स्वभाव के अनुसार मिथ्याओं, पापों, नीच अनुरागों और नीच घृणाओं में फंसी हुई इंसानियत को इन खौफनाक गुलामियों से आजाद करने के लिए और सत्यधर्म की अमूल्य बरकतों से मालामाल करने के लिए पूरे जोर के साथ संग्राम करने लग जाते हैं। यह बिल्कुल अनोखा और विशेष कार्य क्या लेखों और क्या व्याख्यानों के द्वारा जोर - शोर से जारी होता है। परन्तु उनके लासानी कारज को अपने स्वभाव के उल्टे रूप में देखकर इंसानियत ने उन्हें तरह - तरह से सताया और तड़पाया है। नेचर ने देवात्मा को तो प्रकट कर दिया और उनकी देव शक्तियों ने वेग से जीवनव्रत भी ग्रहण करवा दिया और सारी मानव जाति, हां सारे विश्व के कल्याण का एक मात्र सच्चा द्वार भी खोल दिया। परन्तु मनुष्यमात्र जो वर्षों से इस लासानी हजूर का इन्तजार कर रहा था। उसने उस देवात्मा का कोई स्वागत न किया, बल्कि उस लासानी जहूर को तरह - 2 से सताया और तड़पाया गया। उनके

यह सब दुखों, त्यागों, उत्पीड़नों की सच्ची और अद्वितीय गाथा वाणी और लेखनी की पहुंच से बहुत परे है, हाँ सारी मानवता की सोच – समझ से बहुत परे है और परे रहने के लिए है। जिस देव जीवन को सारी मानवता ने सिर पर उठाना था, जो देव जीवन सर्वोच्च सन्मान और श्रद्धा पाने का अधिकारी था जिस देव जीवन पर मानवता को बलिहार होना चाहिए था, वही देव जीवनधारी देवात्मा मनुष्यों से घृणा और उत्पीड़न का पात्र समझा गया है। उनका यह उत्पीड़न जीवनव्रत ग्रहण करन से पहले ही शुरू हो गया। जीवनव्रत ग्रहण करने के समय भगवान का शरीर बहुत मजबूत और रोगों से शून्य था। परन्तु दो – तीन सालों में ही जीवन व्रत सम्बन्धी काम का अतिशय बोझा पड़ा और धन के अभाव के कारण शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा के आवश्यक सामानों से वंचित होना पड़ा और दूसरी ओर विरोधियों और उत्पीड़न कारियों की तरफ से लगातार आघात पर अघात मिले कि जिससे उनका शरीर तरह – 2 के रोगों का घर बन गया। भगवान देवात्मा खुद हैरान होकर फरमाते हैं :– "मुझे इस बात की बड़ी हैरानी मालूम होती है कि मेरे शरीर के साथ जो – 2 कुछ जुल्म हुआ है, वह वह जुल्म सह कर मैं अब तक जिंदा कैसे रह सका।"

भगवान देवात्मा अपने जीवन व्रत की विरोधता के विषय में फरमाते हैं :– "मेरा यह जीवनव्रत ग्रहण करना और अपने व्रत सम्बन्धी कार्य की घोषणा करना हजारों मनुष्यों के लिए इस प्रकार प्रतीत हुआ कि जिस प्रकार किसी गांव में किसी भेड़िये वा शेर का घुस आना हानिकारक और डरावना प्रतीत होता है। और जैसे बन्दूक की आवाज सुनकर कौवों में कोलाहल मच जाता है और चारों ओर से कागारौल आरम्भ हो जाती है, उसी प्रकार मेरे व्रत की घोषणा के शब्दों को सुनकर चारों और कोलाहल मच गया। पागल है, ख़ब्ती है, मूर्ख है, देश में पहले हि बहुत भिख – मंगे थे, अब एक और भिखमंगा पैदा हो गया, इत्यादि शब्दों की गूंज आरम्भ हो गई।"

भगवान देवात्मा की विरोधता इस हद तक बढ़ गई कि भगवान फरमाते है :– "ऐसा कोई नीच से नीच अपराध न था कि जिसका मैं अपराधी नहीं बताया गया। मुझे झूठा, ठग, प्रवंचक, औरों की सम्पद को अपहरण करने वाला प्रगट किया गया। व्यभिचारी और कंजर बताया गया। जब मेरी कन्या की मृत्यु हुई, तो यह प्रकाशित किया गया, कि मैंने उसे मार डाला है। मुझे खूनी और हत्यारा प्रसिद्ध किया गया, और वह भी ऐसा खूनी नहीं, कि जिसने कोई एक खून किया हो, परन्तु कई खून। देश और जाति के लिए मुझे नाना प्रकार से महा हानिकारक बताया गया। और खबर नहीं और क्या – 2 कुछ प्रगट किया गया। और यह सब कुछ जिव्हा के द्वारा ही नहीं, किन्तु वर्षों तक विभिन्न अखबारों में लिखने के द्वारा, बड़े – 2 रास्तों पर छपे हुए किन्तु गुमनाम इश्तिहारों के लगाने के द्वारा और विभिन्न भाषाओं में पुस्तकों के प्रचार द्वारा। जब कोई जन मेरी शक्ति के प्रभाव से मेरी ओर आकृष्ट होकर आया है तब जैसे किसी मृत देह पर गिद्ध टूट कर पड़ते हैं, वैसे हि मेरे विरोधियों ने उसे घेरना, और घेरकर नाना प्रकार से बहकाना और डराना आरम्भ किया।"

भगवान देवात्मा की विरोधता यहीं पर समाप्त नहीं होती भगवान फरमाते है;

"मैं अपने स्थान में प्रचार अथवा वार्षिक उत्सव आदि सम्बन्धी जो सभाएं करता था, उनमें यह

लोग आकर जिस प्रकार की लीला करते थे, उससे एक 2 बार ऐसा प्रतीत होता था कि यह लोग अपनी नीचता के प्राबल्य से उस समय की किसी गवर्नमेंट की भी प्रवाह नहीं करते। बैंचों और लैम्पों का तोड़ना, एक 2 समय किसी वस्तु को आग लगा देना, आश्रम में ईंटो और रोड़ों की वर्षा करना, चिल्ला 2 कर अश्लील गालियां देना, फक्कड़ बकना, उनका एक साधारण कार्य था। मेरे साथीयों को राह में छेड़ना, उन पर मट्टी और ढेले फेंकना, उन्हें घूंसे मारना, किसी का लाठी से सिर फोड़ देना, उनके हाथों से प्रचार सम्बन्धी पुस्तकें छीनकर फाड़ देना, इत्यादि कामों के द्वारा हमें सताकर वह बहुत प्रसन्नता लाभ करते थे। मेरे मार डालने के लिए लिखकर धमकियां देते थे। छपे हुए विज्ञापनों में ऐसी कामना प्रकाश करते थे कि कोई राक्षस आकर इसका गला घोंट दे। यह विरोधता बढ़ते – बढ़ते सन् 1892 में तूफान की शकल कबूल करती है। सब तरफ से मेरे और मेरे व्रत को नष्ट कर देने के लिए बड़े जोर के साथ प्रयत्न शुरू हुए। चारों ओर से महा दुख दाई तूफान उठने लगा। इधर मैं पहले से हि ऐसे हि अजाबों से रोगी बन चुका था, उधर इन 'रहमदिलों' ने मुझ रोगी को भी जिबह (मार) कर खा जाने की ठान ली।

सन् 1892 ई. में कितने ही कृतघ्न लोग भगवान के मिशन के विरोधियों के साथ जा मिले। यही वो सन् 1892 ई० का वर्ष था जब भगवान के मिशन के लिए बहुत संकट का काल था। विरोध का जैसा भयंकर तूफान तब उठा था, वैसा उससे पहले कभी नहीं उठा। उस 1892 के हालात के बारे में पूजनीय भगवान लिखते हैं : –

"विरोधियों के हमले बराबर जारी रहे। इन्हीं दिनों में एक कृतघ्न ने मेरे विरुद्ध एक किताब मुशतहिर की, और बाज़ ने अख़बारों में बहुत से झूठे मज़मून भी छापे। इन सब के द्वारा मेरे विरुद्ध घृणा और विद्वेष की अग्नि को खूब भड़काया गया। पहली नवम्बर सन् 1892 को लाहौर में एक विराट सभा भी की कई, कि जिसमें हज़ारों आदमी शामिल थे। इस मीटिग में, उसे जिसे कुछ दिन पहले कई कृतघ्न अपना परम हितकर्ता कहते थे, अर्थात् मुझे, और मेरे परिवार को, और मेरे कई अनुयाई, जो पहले उनके श्रद्धा के पात्र थे, और जो उनकी तरह बाग़ी नहीं बने थे, खूब दिल खोलकर कोसा गया। जिस ईश्वर के आदेश से कुछ दिन पहले वही लोग मेरे पास अपने आपको भेंट करने के लिए आए थे, उसी की वर्तमानता में अब इस भरी सभा में मेरे मरने और मेरी पत्नी के शीघ्र विधवा हो जाने के लिए भक्ति पूर्वक प्रार्थना की गई।..... उनकी सभा के दो दिन बाद जब मैंने अपने आश्रम में एक पब्लिक सभा का आहवान किया और अपनी डिफ़ेन्स पेश करने की कोशिश करनी चाही, और वह कोशिश भी बहुत सख़्त तकलीफ़ और बीमारी की हालत में, तब इन न्यायकारी ईश्वर के भक्तों ने अपनी क़लई खुलती देखकर उस सभा को अपने भयानक शोर गुल, शरारत और दंगेबाज़ी के द्वारा होने न दिया। और अगर मेरी रक्षाकारी शक्तियां मेरी रक्षा न करतीं और पुलिस के भिन्न कुछ और जन मेरे पास न होते, तो वह लोग मुझे पीस कर, और यथा सम्भव मुझे जान से मार कर अपने दिलों को ठंडा करते। यह सभा तो होने से रह गई, पर मेरे पहले से बहुत रोगी शरीर की स्नायु प्रणाली पर उनकी इन राक्षसी क्रियाओं का इस क़दर आघात लगा, कि वह बिल्कुल चकना चूर हो गई, और

मैं निहायत सख़्त बीमार हो गया - मेरी बीमारी दिनों दिन बढ़ने लगी, और मैं आखिरकार उस अवस्था में पहुंच गया, कि जिसमें मेरे बचने की कोई आशा न रही।

रात का समय था, और चारों और सन्नाटा था। मृत्यु का अमल मुझ पर जारी था, और मैं बिल्कुल बेहोश पड़ा हुआ था। मेरे इर्द गिर्द जो लोग मौजूद थे, वह यही समझते थे, कि मेरे लिए वह रात काटनी मुशकिल है। मुझे खुद भी पता न था, कि मैं कहां हूं? परन्तु इस घोर संकट की अवस्था में भी मेरे कुछ परलोक वासी उच्च सम्बन्धी मेरे पास उपस्थित होकर मेरे बचाने के लिए अपना 2 धर्म्म बल प्रयोग कर रहे थे। जीवन और मृत्यु में संग्राम जारी था। आख़िरकार धर्म्मबल ग़ालिब आया, मृत्यु का कार्य बन्द हुआ, और मैं होश में आ गया। तब से आरोग्यता का रुख़ शुरू हुआ, और प्रायः दो महीने में मैं फिर चलने फिरने के लायक़ बन गया। मौत के बिस्तर से उठकर मैं फिर अपने व्रत सम्बन्धी कार्य में लग गया।"

ऐसी हालात में भगवान के दिल से वह आह निकली थी, जिसे विलाप के शीर्षक से 'धर्म जीवन' पत्रिका में छापा गया था। इस विलाप में से बहुत चंद शब्द यह भी थे :-

"आह! मेरी हालात कैसी दर्दनाक है। हाय! मेरी जिन्दगी किस कदर रहम और तरस के काबिल है। इस दुख और आजाब की बुनियाद कहां है? उन लोगों की पिशाचाना जिन्दगी में, कि जिनके उद्धार और जिनके अन्दर धर्म की जिन्दगी पैदा करने का मिशन मेरे सिर पर है। और जो अपनी पिशाचाना जिन्दगी के तरफदार और आशिक होने के कारण मुझे जानबूझकर या बेखबरी से तरह - 2 का आजाब देने में खुशी हासिल करते हैं।"

इस विलाप का समापन अंश बेहद हृदय विदारक है। उन्होंने अत्यन्त बिलबलाकर पृथ्वी और आकाश को साक्षी बनाकर अत्यन्त करुणा उत्पादक शब्दों से उन दोनों को सम्बोधन किया था जो इस प्रकार था -

"लेकन क्या इस बेगुनाह का यह खौफ़नाक दुख और अज़ाब उठाना यूंही जायेगा? क्या जो शख़्स इस बोझ के दुःख से लंबे मार्ग पर पहुंच चुका है, और जिसको अगर वह चाहता, तो कभी का परे फेंक सकता था, मगर जिसको उसने नेचर और अपने मिशन के मक़सद के लिए सच्चा और वफ़ादार रहने की गरज़ से कभी परे नहीं फेंका, और दूसरों के उद्धार और मंगल के लिए उसको अपने सिर पर लेकर बरसों से लगातार एक 2 इंच कुर्बान होता चला आया है, और इस अर्से में एक 2 वक्त में लगातार उसे अज़ाब मिला है, उसके मुक़ाबल में घड़ी भर की फांसी की तकलीफ़ भी कुछ हक़ीक़त नहीं रखती! क्या वह सब बेमानी और बे मतलब साबित होगा? और क्या ऐसे शख़्स की यह ज़िन्दगी यूंहि बेअसर जायेगी? और क्या इस रुहानी पुतले का ज़हूर यूंहि खाली जाएगा? क्या इस पुतले की कोई खूबी ज़ाहिर न होगी? क्या उसका असल मिशन कभी किसी पर न खुलेगा? क्या हमेशा ही तमाम दुनिया उससे अपना मुंह मोड़े रखेगी, और सिर्फ नफ़रत की निगाह से देखेगी? क्या सुनसान और तनहाई के वक्त के उसके कुल आंसू यूंहि जाया जाएंगे। और उसकी आहो ज़ारी कुछ फल न लाएगी? क्या देवत्व का कुल बीज, जो उसने बोया है, वह गारत हो जाएगा? क्या

उसके दुखिया दिल पर उसकी तरह कुर्बान होकर तसल्ली का मरहम लगाने वाले पैदा न होंगे? क्या इस पिशाचत की दुनिया में उसकी ज़िन्दगी का कोई आशिक और उसका कोई सच्चा प्रेमक और सच्चा सेवक न बनेगा? क्या जिस कुर्बान गाह में उसने अपने तईं कुल्ली भेंट किया है, उसमें उसकी मिसाल से और उसके प्रेम के लिए और लोग अपने तईं कुल्ली भेंट न धरेंगे? क्या जिस पाक और आला बहिश्ती मिशन के लिए वह फ़ना होता है, उसके लिए फ़ना होने की गरज़ से और सैंकड़ों शख्स खड़े न होंगे? क्या जिनके बचाने और उद्धार करने, और उन्हें देवत्व की अबदी ज़िन्दगी और अबदी बहिश्ती बरकतों से माला माल करने के लिए उसने अपने तईं सदके चढ़ाया है, वह न बचेंगे, और देवत्व की अबदी ज़िन्दगी और बहिश्ती बरकतें न हासिल करेंगे? क्या जिस देवत्व की धार को उसने जारी किया है, उसको जारी रखने और लगातार बढ़ाने और कशादा करने के लिए दिनों दिन ज्यादा से ज्यादा रूहें न पैदा होंगी? क्या मेरा मिशन नेचर के क़ानून की बिना पर जहूर में नहीं आया? क्या वह कभी ग़ारत हो सकता है, और तरक्की करने और फैलने के बगैर रह सकता है? ऐ आसमान! तू बोल, और ऐ ज़मीन! तू शहादत दे।"

इस तरह के घोर उत्पीड़न और दिल को छेदने वाले आघातों से भगवान को मौत के बिस्तरे पर लेट जाना पड़ा था, और कई महीनों के बाद सन् 1893 ई. में कुछ सेहत के बेहतर होने पर, फिर उन्होंने पूरे उत्साह और जोश के साथ जीवन व्रत संबंधी काम आरंभ कर दिया। फिर अक्तूबर 1893 ई० को गरमी के कारण बीमार होने पर जलवायु परिवर्तन की गर्ज से बठिंडा में तशरीफ ले गए। वहाँ पर एक पत्र के द्वारा भगवान की सेवा में यह खबर पहुंची कि अख़बार धर्म जीवन में एक नोट में जो मामूली कल्पित दृष्टांत दर्ज है उसे एक नेत्रहीन वकील सरदार चंदा सिंह साहब ने अपनी तरफ लगा लिया है। 22 अक्तूबर 1893 ई. को अख़बार धर्म जीवन ने इसी सिलसिले में यह नोट छापा कि यह सब आम मिसालें थी इसका किसी खास के साथ कोई संबंध न था। पर सरदार चंदा सिंह की इससे कोई तसल्ली न हुई और भगवान देवात्मा और भाई अमर सिंह जी पर मानहानि और फौजदारी मुकदमे दायर कर दिए गए और उसके साथ भगवान देवात्मा के घोर उत्पीड़न का वह निहायत दुखदाई सिलसिला जारी हो गया, कि जिसकी तस्वीर सामने लाने से बदन के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। यह कानूनी उत्पीड़न सन् 1893 ई. से सन् 1898 ई. तक पूरे पांच वर्ष और एक माह तक चलता रहा। इस तौर पर भगवान देवात्मा और उनके गिणती के अनुयाईयों को नौ फौजदारी और दीवानी मुकदमों के बहुत बड़े बोझे के नीचे दब जाना पड़ा कि जिनमें से आठ फिरोजपुर की नाना अदालतों में थे और एक लाहौर में था। इन मुकदमों के शुरू में ही विरोधी वकील ने भगवान को सताने और नुकसान पहुंचाने का सिलसिला शुरू कर दिया और भगवान देवात्मा और श्रीमान भाई अमर सिंह जी के खिलाफ वारंट निकलवाए जाते हैं। परन्तु एक बैंक के यूरापियन मैनेजर साहिब ने भगवान देवात्मा और श्रीमान अमर सिंह जी की जमानतें दाखिल कर दी। और इस तौर पर भगवान को मुसीबत में डालने की यह पहली चाल नकारा साबित होती है। दूसरी बार फिर श्री देवगुरू भगवान और श्रीमान अमर सिंह जी के खिलाफ

वारंट निकलवाए जाते हैं। विरोधी दल यह पूरी उम्मीद रखता है, कि इसकी चाल इस बार ज़रूर कामयाब प्रमाणित होगी, क्योंकि वहां उस वक्त भगवान को जमानत देने वाला और उनकी मदद करने वाला कोई जन न मिलेगा और वह भगवान को जेल में पहुंचाने में कामयाब हो जाएंगे, मगर नेचर के बहुत अजीब और गुप्त इंतजाम से उसके यह कुल मंसूबे भी चकनाचूर हो जाते हैं। मोगे के सरदार साहिब श्रीमान जमीयत सिंह जी भगवान देवात्मा और श्रीमान अमर सिंह जी की जमानत दाखिल कर देते हैं और इस तौर पर भगवान को जेल में भिजवाने की यह बहुत बड़ी चाल भी पूर्णत: असफल प्रमाणित होती है। भगवान को इन मुकदमों के दौरान सख़्त आर्थिक उलझनों, और अपने जीवन व्रत संबंधी काम में रुकावटों के भिन्न असह्य हार्दिक आघातों की वजह से शारीरिक रोगों का भी शिकार होना पड़ा। अपनी मुश्किलों के विषय में भगवान ने "मुझ में देवजीवन का विकास" में लिखा हैं :

"मेरे लिए समाज से बाहर सब तरफ़ों से सहाय और सहानुभूति के दरवाज़े बंद थे और हम लोग मुकदमों के खर्च के भिन्न अपनी मामूली आवश्यकताओं के लिए भी फिकर में रहते थे।"

इन मुकदमों में मिशन की सारी पूंजी खर्च हो गई, समाज के अख़बार बंद कर देने पड़े, प्रेस बेच देना पड़ा, देवाश्रम किराए पर देना पड़ा, दफ्तर का सामान बेच देना पड़ा, समाज के कर्मचारियों का काम बंद कर देना पड़ा, भगवान को अपने योग्य पुत्र की पढ़ाई बंद करवा देनी पड़ी। इन सख्त आर्थिक मुसीबतों के भिन्न भगवान देवात्मा को उन मुकदमों के दौरान जो गहरे और असह्य हार्दिक आघात खाने पड़े, उनकी कथा भी निहायत दर्दनाक है। भगवान को प्राय: प्रत्येक पेशी पर अदालत में पेश होने पर भांत - 2 के अपमानमूलक प्रश्न करके उन्हें दिक्क किया जाता, उनका मजाक उड़ाया और उन्हें तमाश - बीनों की न्याई और इशारेबाजी का निशाना बनाया जाता था और उन्हें बदनाम, अपमानित करने के लिए भांत - 2 का संग्राम किया जाता था। उनका विरोधी वकील भी अदालत में खुल्लम खुल्ला तौर से यह कहता है कि "मेरी जिंदगी का मिशन देव धर्म मिशन को नष्ट करना है।" भगवान को एक - एक बार वकील हासिल करना मुश्किल कर दिया गया। भगवान की तरफ से अगर कोई वकील पेश होता तो विरोधी उसका अपमान करके उसे भगा देते। एक 2 बार बरसों का उपकृत जन उनके हक में सच्ची गवाही तक देने से इंकार कर देता था। भगवान को अपनी जिसमानी बीमारी और कमजोरी की हालात में कभी लाहौर से और कभी मिंटगुमरी से फिरोजपुर आना पड़ता है। कोई मौसम हो, चाहे सख्त गर्मी हो, चाहे सख्त सर्दी, चाहे लू और आंधी चलती हो, चाहे बरसात और ओलों का तूफान हो, उन्हें तारीख पेशी से पहले फिरोजपुर पहुंचना पड़ता है। अगर एक वक्त में उन्हें रात के सफर की बेआरामी और तकलीफ में से गुजरना पड़ता है, तो दूसरे वक्त में जून जुलाई की तेज धूप और लू के निहायत तकलीफ देह मौसम में जाना पड़ता है और तीसरे ऐसे समय में शारीरिक बीमारी की हालत में भी सफर करना पड़ता है और एक - एक समय दाढ़ की सख्त तकलीफ या एक - 2 और सख्त शारीरिक तकलीफ़ की हालत में इसके इलाज वगैरह का जरूरी सामान रेलगाड़ी में साथ ले कर और रेलगाड़ी में ही सेक आदि करते हुए सफर करना पड़ता है। फिर फिरोजपुर पहुँच कर

शुरू शुरू में विशेषकर उनके ठहरने के लिए किसी अच्छे मकान का मिलना बहुत मुश्किल कर दिया जाता है, और मनुष्य सृष्टि के सरताज को कभी किसी सराय में ठहरना पड़ता है, कि जहां घोड़ों की लीद की सख्त बदबू और मच्छरों की अधिकता से उन्हें सारी रात सख्त बेचैनी में जाग कर काटनी पड़ती है और कभी किसी सराए के घटिया से मकान में रहना पड़ता है। कभी किसी ऐसे चौबारे में ठहरना पड़ता है कि जिसकी नीचे की छत निहायत कमजोर है और पेचिश की सख्त तकलीफ में जरूरत के लिए जाने पर छत में सुराख हो जाता है और उनका पाँव नीचे धंस जाता है और वह किसी बड़ी दुर्घटना से बाल-2 बच जाते हैं। फिर पेशी वाले दिन उन्हें कचहरी के नियत समय से पहले कचहरी अहाता में हाज़िर रहना पड़ता है, विरोधी यह कोशिश करता है कि उन्हें बैठने के लिए कोई जगह न मिले और वहाँ पर बैठने के लिए कोई उचित स्थान न मिलने से देवात्मा को कभी एक या दूसरे पेड़ के नीचे और कभी किसी दीवार की ओट में बैठकर एक-2 बार सारा-2 दिन प्रतीक्षा में काटना पड़ता है, वहाँ पर आम लोग बतौर तमाशाई इकट्ठे होकर उनकी तरफ उंगलियां उठाते और चर्चा करते हैं, और कई बार ऐसी तकलीफ की हालत में दिनभर काटने के बाद शाम को उन्हें अदालत से यह खबर दी जाती है कि आज पेशी नहीं हो सकती, और इस तरह तकलीफ में से गुजर कर उन्हें बगैर किसी कार्रवाई के वापिस जाना पड़ता है। एक-2 बार सख्त सर्दी के मौसम में जब वह कचहरी में पेशी भुगतने के लिए जाते हैं, और आसमान पर बादल छाए हुए होते हैं, और बहुत ठंडी हवा चलती हैं और बूंदा बांदी जारी होती है, और उनके बीमार शरीर के लिए मौसम की ऐसी हालात में खुली जगह बैठना बहुत हानिकारक होता है क्योंकि कचहरी अहाता में उनका विरोधी पूरी कोशिश करता है कि उन्हें बैठने का मौका न मिले। उन्हें पेचिश की बिमारी में भी अदालत में हाजिर होने के लिए मजबूर किया जाता है। इस हालात में उन्हें घंटों खड़े रहना पड़ता है और भगवान अपने प्रबल इरादे और पेचिश को रोकने की दवाइयों की सहायता से इस घोर उत्पीड़न में से गुजरते हैं। भगवान देवात्मा को इसी हालात में कई दफा अदालत की कार्यवाही का समय हो चुकने के बाद भी अपराधी के रूप में घंटों खड़ा रहना पड़ता है और मजिस्ट्रेट साहिब लैम्प या दिया जलाकर मुकदमा सुनने का कार्य जारी रखते हैं। ऐसी बीमारी की हालात में न तो भगवान को बैठने के लिए कुर्सी दी जाती थी और न ही जरूरत के लिए अदालत के कमरे से बाहर जाने दिया जाता था। हाय! श्री देवगुरू भगवान, देवात्मा होकर भी अपराधी के रूप में खड़े हैं और मनुष्यात्मा देवात्मा पर फैसला देने के लिए बैठे हैं। इस घोर कानूनी उत्पीड़न से उनके शरीर को भारी नुकसान हुआ। स्नायु प्रणाली चकनाचूर हो गई, जोड़ों का सख्त दर्द शुरू हो गया, दाढ़ का दर्द शुरू हो गया, पाचन प्रणाली बिगड़ गई और एक दो बार दिल के ऊपर के हिस्से में ऐसा सख्त दर्द होता था कि उससे दिल की गति बंद होने का सख्त अंदेशा हो जाता था इन्हीं मुकदमों के दौरान भगवान देवात्मा के मिशन की एक विशेष कर्मचारनी और अनुरागी शिष्या श्रद्धेय कुमारी प्रेम देवी जी के परलोक चले जाने से भगवान को गहरा सद्मा लगा। फिर इन मुकदमों के दौरान ही पूजनीय भगवान का ईश्वर विश्वास चला गया, और उनके कई साथी भगवान

को छोड़कर चले गए। ईश्वर विश्वास के चले जाने पर भगवान की विरोधता बढ़ जाएगी इस विषय में भगवान को पता था उन्होंने "मुझ में देव जीवन का विकास" में इस प्रकार लिखा है :-

"मैं जानता था, कि जब मैं ईश्वर का विश्वासी था, तब भी मेरे विरोधी मेरा पीछा नहीं छोड़ते थे। अब इस देशव्यापी प्रचलित विश्वास के चले जाने की खबर पाकर उन्हें मुझ पर आक्रमण करने के लिए एक और शतघ्नी तोप मिल जाएगी। परन्तु इसके साथ मैं यह भी जानता था कि इस झूठी तोप के झूठे गोलों से मैं उड़ नहीं सकता।"

इन्हीं मुकदमों के दिनों भगवान के एक पुत्र उनके लिए कष्टदायक प्रमाणित हो रहे थे, उनकी एक उल्टी गति का जब भगवान को पता चला तो भगवान को इतना बड़ा और दारुण आघात लगा कि उनकी स्नायु प्रणाली बिल्कुल चकना चूर हो गई, वे लाहौर से मिंटगुमरी जा रहे थे और रेल के बेंच पर वे बेहोशी की हालत में पड़े रहे, उनके दो तीन साथी उदास हालत में उनके पास बैठे थे, भगवान को आशंका हुई कि कहीं रेल गाड़ी में ही उनका शरीर न छूट जाए। फिर कुछ काल के बाद उनका (उनके पुत्र का) पत्र भगवान को मिला जिससे उनको बहुत आघात लगा। मिंटगुमरी में बहुत गर्मी थी, भगवान सिर पर पानी से भीगा हुआ तौलिया रखकर और पांव पानी की बाल्टी में रख कर लिखने का काम करते जिससे उनको खांसी और दमकशी का रोग हो गया, उनके लिए सांस लेना मुश्किल हो गया। न वे आराम से सो सकते थे और न ही आराम से बैठ सकते थे। लाहौर के डॉक्टर ने कहा दिया कि यह रोग अब नहीं जायेगा। इन्हीं पुत्र की ओर से भगवान को फिर आघात लगा। भगवान ने उनको 30 अगस्त 1895 को यह लिखा :

"मैं निहायत बीमार हूँ। आघात असह्य है। मुझ पर दया करो। मेरे साथ अपने संबंध, अपनी प्रतिज्ञाओं, मेरी सेवा और मेरे पद को स्मरण करो।"

आखिरकार पांच सालों तक इस महा घोर संग्राम, और हृदय विदारक और अनेक बार असह्य दुखों के सहने और धन आदि अन्य विविध प्रकार की हानियां उठाने के बाद भगवान के इस कानूनी उत्पीड़न की महा अंधेरी रात समाप्त होती है, और देवात्मा के देवरूप का सूर्य पहले की अपेक्षा बहुत चढ़ बढ़कर अपनी प्रखर किरणों के साथ प्रकाशित होता है, और उसके जीवन व्रत का काम फिर पूरे वेग के साथ सम्पन्न होने लगता है।

भगवान देवात्मा को उनके सेवकों, कर्मचारिओं और पारिवारिक जनों द्वारा नाना नीच गतिओं से घोर से घोर दु:ख और क्लेश मिलते रहे।

मिस्टर धर्मपाल का पहला नाम अब्दुल गफूर था। देवसमाज के असरों में आकर जहाँ उनके कुल इस्लामी विश्वास दूर हो गए थे, वहाँ गोश्तखोरी आदि की जो बुरी आदतें उनमें मौजूद थीं, वह भी चली गई थीं और इस तौर पर कितने ही पहलुओं में उनके जीवन में बेहतरी आई थी और वह देवसमाज के बकायदा मैंम्बर बन गए थे। उन्होंने देवसमाज की मैंम्बरी के दिनों में ही बी.ए. की परीक्षा पास की और देवसमाज हाईस्कूल मोगा में उन्होंने बतौर टीचर काम करना शुरू किया। जिन दिनों यह वहाँ पर टीचर थे, उन दिनों वहाँ पर मोगा में हैजा फूट पड़ा और मिस्टर अब्दुल गफूर भी इस बीमारी में ग्रस्त हो गए और श्रीमान डॉक्टर हरनाम सिंह जी मैंम्बर देवसमाज

ने उनकी जान बचाई और खुद शहीद हो गए थे। श्रीमान डॉक्टर हरनाम सिंह जी की इस कुर्बानी से मिस्टर अब्दुल गफूर की जिस्मानी जिंदगी तो बच गई, लेकिन इसके बाद उनकी रूह में एक आत्मिक महा रोग ने अपना प्रकाश करना शुरू किया कि जिसका नाम अहं अनुराग या घमंड का नीच भाव है। उसके बस होकर उन्होंने स्कूल के डिसिप्लिन को तोड़ना शुरू किया कि जिससे लाचार होकर देवसमाज को उन्हें स्कूल स्टाफ से अलग करना पड़ा और देवसमाज की मैंम्बरी से भी यह अलग हो गए। शुरू शुरू में तो वह देवात्मा का उपकार ही मानते रहे पर बाद में लगातार आर्यसमाजियों के असरों में रहते - रहते देवसमाज की मुखालफ़त करने के लिए तैयार हो गए और उन्होंने देवसमाज के बरखिलाफ कसरत सी किताबें, ट्रेक्ट और पैम्फलेट छपवाए और उनमें उन्होंने जिस कदर फक्कड़बाजी की और गंदे और झूठे इल्जाम देवसमाज के पूजनीय बानी और उनके कर्मचारियों और मैंम्बरों के बर - खिलाफ लगाए, उनका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता। मिस्टर ध र्मपाल ने यह पुस्तकें और ट्रैक्ट किस कदर बड़ी संख्या में मुतल्लक छपवाए, उसके मुतालिक वह खुद अपने अखबार "इंद्र" अगस्त सन् 1909 में लिखते हैं। -

"मैंने देवसमाज के बरख़िलाफ जिस कदर गोलबारी की, वह दर हकीकत खौफ़नाक थी। डेढ़ साल के अर्से में मैंने बिला इमदाद के सत्तर हजार के करीब किताबें, रिसाले और ट्रैक्ट इस सोसाइटी को नीचा दिखाने और इसकी तालीम से नौजवानों को बचाने के लिए पब्लिक में बखेरे।"

धर्मपाल (अब्दुल गफुर) ने देवात्मा के ख़िलाफ युद्ध में उनके दो पुत्रों को भी मिला लिया और देवात्मा के विरुद्ध खूब जंग किया कि जिसमें आखिरकार सत्य शुभ अनुरागी देवात्मा की जय हुई।

धर्मपाल की विरोधता के बाद दौर आया, महा कृतघ्न देव रत्न का। पं देव रत्न अपनी पढ़ाई के दिनों में ही देव समाज में आ गए थे, देव समाज में आने से पहले उनकी जिंदगी महा हानिकारक थी कि जिसमे देवात्मा के देव प्रभावों से विशेष परिवर्तन आया और वह अपना जीवन भी देवात्मा के मिशन में भेंट करके कर्मचारी बन गए थे। आप 24 वर्ष देवात्मा से महा उपकार पाते रहे। फिर अपनी एक कमजोरी की वजह से देव समाज से अलग कर दिये गए। देव समाज से कटने के बाद वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए और उन्होंने देव समाज के अखबार 'जीवन तत्व' के प्रिंटर पर मुकद्दमा दायर कर दिया। उसने देवात्मा और उनके चार कर्मचारियों को गवाह के तौर पर तलब किया, देव समाज के सैकड़ों कागज तलब किये। धर्म पाल की तरह उसने भी भगवान के उन्हीं दो पुत्रों को अपने साथ मिला लिया था। पं देव रत्न ने भगवान और देव समाज के विरुद्ध लेक्चर दिये, अखबार लिखे। जब उसे यह मालूम हुआ कि वह अपने द्वारा दायर मुकदमें में फंस जायेगा तो उसने मुकदमा वापिस ले लिया। जो देव रत्न कहता था कि "देवगुरू साहिब मेरे हमलों से जामबर न हो सकेंगे" उनकी सारी नापाक कोशिशें चकना चूर हो गई। श्री देवगुरू भगवान का आविर्भाव जैसे इस नेचर के विकासक्रम में लासानी है, वैसे ही उनके संबंध में पंडित देवरत्न की कृतघ्नता भी लासानी है क्योंकि इंसानी इतिहास में हमें किसी ऐसे मोहसनकश का पता नहीं मिला कि जिसने अपने सबसे आला उपकारी से 24 साल तक लगातार बेबहा और बेइन्तहा विविध प्रकार के

उपकार हासिल करने के बाद (जैसा कि कृतघ्न देवरत्न ने अपने तहरीरों वा इकरारों के मुआफिक श्री देवगुरू भगवान से हासिल किए हैं) अपने इस उपकारी के साथ वह सब बुरे सलूक किए हों जोकि पंडित देवरत्न ने अपने सबसे बड़े उपकारी के साथ अब तक किए हैं। देवसमाज के इतिहास में यह मोहसिन कश विशेष रूप से याद किया जाएगा। नेचर के विकासकारी विभाग के अटल नियम के अनुसार आखिरकार श्री देवगुरू भगवान देवात्मा की ही जय होनी लाज़मी थी, जो हुई।

भगवान देवात्मा के अन्य सामाजिक व पारिवारिक जनों के भिन्न उनके दो पुत्रों और एक पुत्री के द्वारा भी उन्हें जो दुख और अजाब मिले हैं वह भी दर्दनाक हैं।

सोलन में एक राजा ने गोलियां चलाकर उन्हें जान से मार देने की नापाक कोशिशें की ।

9 मई 1922 : पर्वत आश्रम सोलन में भगवान देवात्मा की ज़िन्दगी का दूसरा विलाप हुआ। जिसमें वो अपनी शारीरिक रोगी अवस्था और दुर्बलता के कारण परहित विषयक कार्य के अयोग्य होकर 20 मिनट तक बिलबिलाते रहे।

9 मई 1928 : सोलन पर्वताश्रम पर देवशास्त्र तीसरे खण्ड की रचना में विघ्न के बाद भगवान देवात्मा का तीसरा विलाप : सोलन पर्वताश्रम पर देवशास्त्र तीसरे खण्ड की रचना करते समय भगवान देवात्मा का मस्तिष्क बहुत थक गया था (वह 79 वर्ष की आयु को पहुँचने वाले थे) और भगवान देवात्मा अपने लेखन सम्बन्धी अति हितकर और परम आवश्यक काम में विघ्न पड़ता हुआ देखकर कितनी देर तक रोते रहे कि मेरा पुस्तक रचने का इतना महत्वपूर्ण कार्य रहा जा रहा है। भगवान ने बिलख बिलख कर विलाप किया। उनके अद्वितीय त्यागों की गाथा बहुत लम्बी है, जिसका हम पूरा पूरा ब्यान नहीं कर सकते। इसके लिए कम से कम आत्म कथा का पाठ अवश्य करें।

-गौतम गोनियाना

भजन

दुश्मनों ने आपको, दिन-दिन सताया बेतरह,
आप पर इल्जाम इक-इक, घड़ लगाया बेतरह
आपको ज़ानी कहा, खूनी बताया बेतरह
ठग कहा, झूठा कहा, शैतान बताया बेतरह,
आपका यह दुख सहना, सब हमारे वास्ते।
मुस्तकिल मजबूत रहना, सब हमारे वास्ते
आपके व्रत के मिटाने का, जतन जब था हो रहा
जिस्म ओ जां पर जबकि आपके, सख़्त हमला हो रहा
फिर भी नहीं अपने मिशन से, इक कदम पीछे धरा,
गो त्याग इसकी राह में, हर किस्म का करना पड़ा
इक अकेले आप थे, और बे सरो-सामान थे
जां कंदनी का वक्त था, घोर दुख घमसान थे
जो थे मुखालिक आपके, थे आप उनके खैरख़्वाह
आप चाहें उनका मंगल, होके उनके बही-ख़्वाह
मौत से बच जाएँ रूहें, होवें मत हरगिज़ तबाह,
लें शरण वह आपकी, और आपसे पावें पनाह,
दुश्मनों के आप दुश्मन, हो कभी सकते नहीं,
हित स्वरूप होकर कभी भी, हानि कर सकते नहीं।

सत्य धर्म शिक्षा और विश्व का परम कल्याण।

अद्वितीय त्याग करके, मनुष्यों से घोर से घोर दु:ख और कष्ट पाकर भी भगवान देवात्मा ने सत्य धर्म का अद्वितीय दान दिया है। देव शास्त्र जैसे अद्वितीय ग्रन्थों का दान दिया। सैकड़ों पुस्तकों और लेखों को रच कर हमारे परम हित का द्वार खोला। उच्च आत्माओं को प्रदान किया। सत्य धर्म शिक्षा जो भगवान ने दी है उन्ही के शब्दों में हम नीचे दर्ज करते हैं -

1- विश्व सत्य और नित्य है।

2 - विश्व जड़ और शक्ति सम्पन्न है।

3 - विश्व में जड़ और शक्ति के परस्पर कार्य से अविराम परिवर्तन होता रहता है।

4 - विश्व में यह अविराम परिवर्तन उसके विविध अस्तित्वों के लिए विकास अथवा विनाशकारी प्रमाणित होता है।

5 - विश्व के अस्तित्वों के विकास व विनाशकारी परिवर्तन, उनकी उच्च व नीच गति पर निर्भर करता है। विश्व का प्रत्येक अस्तित्व नीचगति को प्राप्त होकर नीच और उच्च गति को प्राप्त होकर उच्च बनता है।

6 - मनुष्यात्मा भी अपनी नीच गतियों के द्वारा नीच बनता है, और यदि वह अपनी नीच गतियों से मोक्ष लाभ न कर सके, तो अवनत होते - होते एक दिन पूर्णत: नष्ट हो जाता है।

7 - आत्मा में उच्च विकासदायिनी शक्तियों को धर्म शक्तियां कहते हैं। इन धर्म शक्तियों से जिस जीवन की उत्पति होती है, उसी का नाम धर्म जीवन है।

8 - सत्य धर्म जीवन और उसकी सत्य शिक्षा को छोड़कर धर्म के नाम से पृथ्वी में और जो कुछ प्रचलित है, वह सब मिथ्या कल्पना है। मिथ्या कल्पनामूलक किसी मत व विश्वास साधन से आत्मा को केवल यही नहीं, कि कोई लाभ नहीं होता, किन्तु उसको और उसके द्वारा और अस्तित्वों को बहुत हानि पहुंचती है।

9 - मनुष्य जगत के विकास में श्री देवगुरू भगवान के आत्मा के पूर्णांग गठन लाभ की है। उनमें पूर्णांग धर्म जीवन का अविर्भाव हुआ है। उनकी उच्च शक्तियों के प्रभावों को प्राप्त होकर अधिकारी आत्मा नीच गतियों से मोक्ष और धर्म जीवन में विकास लाभ करते हैं।

10 - मनुष्यात्मा ही अपने लिए आवश्यक नियमों के पूर्ण होने पर स्थूल शरीर निर्माण करता है। वह स्थूल शरीर की मृत्यु के पश्चात भी आवश्यक नियमों के पूर्ण होने पर, उसके अनुरूप, परन्तु अपनी उच्च व नीच दशा के अनुसार, उच्च व नीच आकार निर्माण करके जीवित रहता है।

11 - विश्व के भीतर स्थूल लोक भी है, और सूक्ष्म लोक भी। सूक्ष्म लोकों में जो लोक जितना अधिक श्रेष्ठ है, वह अपने सब अंशो में उतना ही अधिक उच्च मेल रखता है।

12 - सूक्ष्म शरीर ग्रहण करने के अनन्तर अत्यंत अधम आत्मा इस पृथ्वी से ऊपर किसी सूक्ष्म लोक में नहीं पहुंच सकते। परन्तु उनसे ऊपर के आत्मा अपनी - अपनी दशा के अनुसार एक वा दूसरे प्रकार के सूक्ष्म लोकों

को प्राप्त होते हैं।

जो आत्मा जहां तक अपनी नीच गतियों से मोक्ष और उच्च गतियों में विकास पाकर किसी उच्च लोक में पहुंचते हैं, वहां तक वह वहां नाना प्रकार के उच्च और सुखप्रद प्रभाव लाभ करते हैं, और अधिक योग्यता होने पर और अधिक विकसित होते हैं।

जो आत्मा किसी ऐसे उच्च लोक को प्राप्त होता है, जहां उसका प्रत्येक विभाग एक दूसरे के साथ पूर्ण मेल रखता है, वहां पहुंचकर वह सब प्रकार के पूर्ण हितकर सम्बन्धियों को प्राप्त होकर पूर्ण शांति और परमानन्द और सदा उच्च से उच्च विकास लाभ करने के योग्य बन जाता है। पूर्णांग धर्म जीवन के लाभ करने के बिना कोई आत्मा इस लोक में नहीं पहुंच सकता।

<u>भगवान देवात्मा की शिक्षा के अनुसार</u>

सत्य धर्म का राज्य आने से मनुष्य का और उसके नीचे के जगतों का भविष्य क्या होगा : – सत्य का भविष्य बहुत सुनहरा है, शुभ का भविष्य बहुत सुनहरा है। सत्य और शुभ का राज्य आने के लिए ही है। सत्य धर्म के राज्य का अर्थ सत्य और शुभ का राज्य है। सत्य धर्म का राज्य आने से मिथ्या और अंधविश्वासों का नाश होगा। झूठ, मूठे, विश्वास, झूठी प्रतिज्ञा, झूठे और मिथ्या ज्ञान, मिथ्या मूलक डर समाप्त हो जाएंगे। मोटे पाप अर्थात् चोरी, रिश्वत, बेईमानी, नशे, मांसाहार, ठगी, व्यभिचार, जीव हत्या आदि का नाश होगा। लोग पहले किए हुए पाप कर्मों का परिशोध करेंगे। सत्य धर्म के राज्य आने से नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का क्रम क्रम से नाश होगा। सत्य धर्म के राज्य आने से मनुष्य आत्माओं में उच्च भावों, उच्च अनुरागों, उच्च घृणा का विकास होगा और योग्य उच्च जीवनधारी, परोपकारी इन्सान पैदा होंगे। जिन घरों में सत्य धर्म का राज्य आएगा, वहाँ अच्छे पुत्र, अच्छे माता पिता, अच्छे पति पत्नी अच्छे भाई बहन, अच्छे पड़ोसी, अच्छे नागरिक, अच्छे मनुष्य, पशुओं और पौधों के सेवाकारी, भौतिक, जगत के सेवाकारी जन पैदा होंगे।

देव राज्य अर्थात् सत्य और शुभ का राज्य लाने से दिल और दिमाग से रोशन सच्चे फिलासफरों, सच्चे कवियों, सच्चे लेखकों और प्रभावशाली पत्रकारों की एक शानदार नसल पैदा होगी। यह दुनिया एक नया रूप ग्रहण करेगी। इस पृथ्वी पर एक नई सभ्यता, नई संस्कृति और अदभुत संस्थाओं का जन्म होगा। देवात्मा के देव प्रभावों से जीवन पथ के राहियों के लिए एक नया संसार खुलेगा और इस पथ के हज़ारों राही होंगे। देवात्मा के देव प्रभाव जिन नसलों को पैदा करेंगे, उसमें व्यभिचार का निशान न होगा, न बेईमान होंगे, न चोर, नशई, मांसाहारी, जुएबाज़ होंगे, और न कोई किसी का कर्जा या अमानत दबाएगा। सभ्यता की सीढ़ी में सबसे नीचे के स्थान पर भी चरित्रवान जन ही पाए जाएंगे और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के ईलाज के लिए और उच्च भावों को विकसित करने के लिए बहुत सी संस्थाएं खुलेंगी, एक नए युग का निर्माण होगा। इस पृथ्वी पर सच्चा स्वर्ग पैदा होगा। मनुष्य और उसके नीचे के सारे जगतों की भलाई का रास्ता सदा सदा के लिए खुल जाएगा।

– गौतम गोनियाना

प्रार्थना

हे देव! आप का आविर्भाव अद्वितीय आविर्भाव! आप का जीवन व्रत अद्वितीय जीवन व्रत! जिस दिन आप ने अपना जीवन व्रत ग्रहण किया, वह दिन क्या **इस देश और क्या इस पृथिवी के लिए अद्वितीय शुभ दिन!** इस पृथिवी में यद्यपि अनेक प्रकार के व्रत धारी हुए हैं, तथापि आप का सा अनोखा जीवन व्रत कब और किसने ग्रहण किया है? किसी ने नहीं।

हे भगवन्! जिस परम लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए आप ने यह पद गाकर :

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा, परम लक्ष्य होवे;
जग के उपकार ही में, जीवन यह जावे।"

अपना अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण किया था, उसी के लिए आप को विश्व ने अपने लाखों वर्षों के विकासकारी संग्राम के द्वारा प्रसव किया था। विश्व के अगणित अस्तित्वों की श्रृंखला के प्रकाश में आप ही इस पृथ्वी में एक मात्र ऐसे अस्तित्व हो सकते थे, कि जो अपनी आत्मिक गठन के विचार से, जैसे एक ओर देव शक्तियों को बीज रूप में लेकर प्रगट हुए, वैसे ही दूसरी ओर उन शक्तियों के आवश्यक विकास पा चुकने पर, ऐसा जीवन व्रत ग्रहण करने के योग्य हुए। आप के ही विशेष अस्तित्व में यह सब कुछ सम्भव था। आप ही अपने इस विशेष अस्तित्व में जैसे आत्मिक गठन की पूर्णत: लाभ करने के योग्य हुए, वैसे ही उस के द्वारा धर्म के पूर्णांग रूप वा देव जीवन के प्रकाशक हुए। आप एक मात्र पूर्णांग धर्म के अवतार! आप पूर्णांग धर्म स्वरूप! आप सत्य धर्म के पूर्ण प्रकाशक! आप सत्य धर्म के पूर्ण आदर्श!

हे देव! जीवन व्रत ग्रहण करने से पहले आप अपनी देव शक्तियों को विकसित करके सब प्रकार की निम्न शक्तियों के अधिपति वा प्रभु बन चुके थे; इसीलिए आप अपने जीवन व्रत के लिए पूर्णत: सच्चे रह कर उसे पूर्ण कर सके।

आप अपनी देव शक्तियों के द्वारा अपने जीवन व्रत की सिद्धि के लिए सब प्रकार के आवश्यक त्याग ग्रहण करने के योग्य हुए। आप का इस पृथ्वी में जैसे जीवन व्रत अद्वितीय है, वैसे ही उसकी सिद्धि के लिए **आपने नाना प्रकार का जो 2 त्याग किया है, वह भी अद्वितीय है।**

हे देव! आप ने अपने आत्मा में देव जीवन को विकसित करके उसकी पूर्ण गठन लाभ की है, कि जिसे प्राप्त होकर ही आत्मा विश्व के प्रत्येक विभाग के सम्बन्ध में जहां एक ओर नीच गतियों के अधिकार से पूर्णत: मुक्त होता है, वहां दूसरी ओर **विकास के महा अदभुत नियम के साथ एकात्मिक भाव अर्थात् एकता स्थापन करके उसके वचित्र कार्य में साथी बन जाता है, और इस प्रकार क्या ऐसा आत्मा ओर क्या विश्व का विकासकारी नियम दोनों ही एक दूसरे के लिए सहायक और सहकारी बन जाते हैं।**

कैसा महान् मेल! और इस मेल के कैसे महान् और अमृत दायक फल!! यह विश्व के विकास के साथ **एकता सम्पादक विषयक तत्व ज्ञान** कैसा अदभुत! कैसा अद्वितीय! हे भगवन्! आप देव जीवन को प्राप्त होकर इस तत्व के दृष्टा और प्रकाशक हुए हैं।

इसके भिन्न आप देव जीवन को प्राप्त होकर मनुष्यात्मा के रूप और उसके जीवन के सम्बन्ध में जिन 2 महा गूढ़ सत्यों के देखने, जानने और प्रकाश करने के योग्य हुए, उन्हें आज तक किसी ने नहीं देखा और नहीं जाना, और नहीं प्रकाश अथवा प्रचार किया था। मनुष्यात्मा क्या है? उसका जीवन क्या है? उसकी नीच और उच्च गतियां क्या हैं? प्रत्येक आत्मा की नीच गतियां चाहे वह आन्तरिक चेष्टा - मूलक हों, और चाहे बाह्यक चेष्टा - मूलक, उसका किस प्रकार नाश करती हैं? और यदि उस में उच्च गति दायक नाना प्रकार का आवश्यक परिवर्तन उत्पन्न हो, वा न हो सके, तो वह किस प्रकार धीरे 2 क्षय - प्राप्त होकर एक दिन पूर्णत: नष्ट हो जाता है? उच्च गति दायक कोई परिवर्तन किस प्रकार होता वा हो सकता है? और उसके द्वारा आत्मा किस प्रकार उच्च वा विकसित होता है, और वह उच्च जीवन में विकसित होकर किस प्रकार उच्च से उच्च लोकों में वास करने के योग्य बनता है; इन सब विषयों में आप ने जो **सत्य** देखे और अपने अनुसन्धान द्वारा जाने हैं, वह जैसे पूर्णत: **विश्व - स्वीकृत वा विज्ञान - मूलक हैं,** वैसे ही इस पृथिवी के सब धर्म सम्प्रदायों की कल्पना - मूलक मिथ्या शिक्षा से बिल्कुल अनोखे और विचित्र हैं। हे देव! आप ही इस सत्य धर्म के एक मात्र अद्वितीय प्रकाशक और शिक्षक हैं।

आह! तब जिस दिन आप हमारी भूमि में आविर्भूत हुए, अर्थात **पौषवदी** प्रतिपदा सम्वत् 1907 वि० का दिन क्या हमारे लिए, क्या हमारी समाज के लिए, क्या हमारी जाति और क्या मनुष्य मात्र के लिए, क्या पशु जगत्, क्या उदिभद् जगत् और क्या भौतिक जगत् के लिए निश्चय अति महान् और आनन्दकारी दिन! और फिर वह केवल आप का जन्म दिन ही नहीं; किन्तु सारे जगत् के हित के लिए आप के **जीवन व्रत** अथवा महा व्रत ग्रहण करने का भी दिन है। तब यह दिन हम सब के लिए और भी विशेष रूप से चिन्तन करने का दिन! विचार का दिन! आनन्द का दिन!! और महोत्सव का दिन है!!!

हे सत्य देव! यदि इस पृथिवी में आपका यह अद्वितीय आविर्भाव न होता, और आप अपनी अद्वितीय देव शक्तियों में विकसित होकर अपना अद्वितीय महा व्रत ग्रहण न करते, और इस अद्वितीय व्रत के पूरा करने के लिए सब प्रकार के अद्वितीय त्याग न करते, और नाना प्रकार के घोर उत्पीड़नों और सांघातिक दु:खों और क्लेशों, विपदों और कठिनाईयों आदि को अपने सिर पर न लेते, और उन में से अपने अद्वितीय धर्म बल के द्वारा उत्तीर्ण न होते तो आज

(1) हम और हमारे पारिवारिक जन कहां और किस अवस्था में होते?

(2) इस पृथिवी को (विशेष कर इस देश को) विश्व-स्वीकृत और विज्ञान-मूलक सत्य धर्म और उसके तत्वों और साधनों की अद्वितीय शिक्षा कहां से मिलती?

(3) देवशास्त्र जैसा अलौकिक शास्त्र हमें कैसे प्राप्त होता?

(4) देवसमाज जैसी हितकर और निराली धर्म समाज हमें कहां से मिलती?

(5) हमारे पारिवारिक पवित्र अनुष्ठानों के सम्पन्न करने के लिए हमें ऐसी सुन्दर और शुभ कर विधि कहां से प्राप्त होती?

(6) हमें अपने और अपने पारिवारिक जनों के नाना प्रकार के शुभ के लिए कई प्रकार की हितकर संस्थाएं कहां से लाभ होती?

(7) हमारे नाना महा हानिकारक मिथ्या विश्वास और संस्कार क्यों कर दूर होते?

(8) हमारे परिवारों से नाना पाप क्रियाओं और दुराचारों के नष्ट होने से हमें विविध प्रकार का जो 2 सुख मिला है, हमें स्वास्थ्य, समृद्धि और शान्ति प्राप्त हुई है, और हमारे कई प्रकार के हानिकारक सम्बन्ध हितकर बने हैं यह सब फल क्यों कर उत्पन्न होते?

आकांक्षा

हे देव! ऐसा हो, कि हम आपके जीवन व्रत की महिमा और सफलता पर विचार कर सकें। आपके इस अद्वितीय जीवन व्रत से कहां तक हमने लाभ उठाया है, हमारे पारिवारिक, सामाजिक और अन्य जनों और उनके भिन्न, पशु, उदिभद् और भौतिक जगत् ने क्या 2 लाभ उठाया है, उस पर विचार कर सकें। कहां तक हमने आपके इस महाव्रत में अपने तन मन और धन आदि को अर्पण करके आपकी **शुभ इच्छा अथवा विकास के महा कल्याणकारी नियम को पूरा किया है, उस पर विचार कर सकें।** कहां तक हमने आप की जीवन व्रत विषयक महान् आकांक्षा को अपने वा किसी और के लिए सफल होने नहीं दिया, और ऐसा करके अपना और औरों का नाश किया है, उस पर विचार कर सकें। हे देव! ऐसा हो कि आपके **देव प्रभाव** हमारे हृदयों को स्पर्श करके उनमें उच्च भाव और उच्च संकल्प उत्पन्न करें और आपके सम्बन्ध में हमारी एक वा दूसरी नीच गति का बोध देकर उस के लिए हमें दुखी और अशान्त करें और हमारे हृदयों के विकारों को नष्ट करें। हे भगवन्! आप के प्रति हमारे हृदयों में श्रद्धा, अनुराग, कृतज्ञता वा सेवा विषयक भाव उत्पन्न अथवा अधिक उन्नत हों, और हम आप के शुभ आशीर्वाद को अधिक से अधिक लाभ करने के योग्य हों।

हे देव! ऐसा हो, कि यह महा यज्ञ हमारे लिए जहां तक सम्भव हो सफल हो, और हमारे अन्य सामाजिक जनों में उच्च आकांक्षाओं, उच्च संकल्पों, उच्च विचारों और उच्च त्यागों और उच्च जीवन के लाने वाला हो, और देवसमाज की पुष्टि और उन्नति का हेतु हो।

(देव शास्त्र खण्ड चौथा)

एक अनुभव

हे मेरे परम उपकारी, परम हितकारी, हमें और हमारे परिवारों को बचाने के लिए अपनी सारी शक्तियां लगाने में अथाह कष्ट और दुख सहने वाले हमारे परम पूजनीय सत्गुरू!

आपके पावन पवित्र चरणों का ध्यान धरकर मैं अति तुच्छ, अति दुर्बल प्रणाम करती हूं।

हे सत्गुरू! आपका जन्म दिन बहुत निकट आ रहा है। हम तुच्छ योग्यता रखने वाले आपके सेवक उसे अपनी बहुत तुच्छ शक्तियों के साथ मनाएंगे। इन दिनों आपके अद्वितीय त्यागों के विषय में पढ़कर दिल दहल जाता है, ऐसा लगता है कि आपका एक 2 दुःख, तसीहा, तड़पन, दिल को चीर कर रख देगा। जब मैं यह याद करती हूं कि आपका जन्म सचमुच ही समय से पहले हुआ, जब दाढ़ के दर्द तक की दवाई नहीं थी, किसी ने acidity का भी ठीक ईलाज नहीं किया, जहां तक कि नीम हकीम ख़तरा जान वाली बात की तरह किसी शुभचिन्तक ने आपको निम्बू पिला दिया जिसने acidity को और बढ़ा दिया। आप फरमाते थे कि मुझे जो भी मेरी तकलीफ कम करने के लिए देता मैं ले लेता था। हम लोग जो थोड़ी सी गर्मी बर्दाश्त नहीं करते, आपने लाहौर की गर्मी के महीने कैसे काटे, सिर पर गीला कपड़ा, रखकर, पानी में पैर डालकर रखना पड़ता, जिससे कई बार आपकी खांसी आदि की तकलीफ और बढ़ जाती। सांस की तकलीफ का कोई proper इलाज नहीं था, कोई inhaler नहीं था, कैसे तड़प तड़प कर आपने रातें काटी, अद्वितीय त्यागों में आपके शारीरिक कष्टों की गाथा पढ़ना ही कठिन है, आप कैसे उसमें से गुजरे और इतनी शारीरिक कठिनाईयों में से गुजरकर इतने ग्रन्थ रचे, इतने जीवन बदले, अध्यात्मिकता के क्षेत्र में कितने अद्वितीय पन्ने जोड़ दिए। आपकी वह रात रातभर की तड़पन, फिर भी सुबह 4 बजे उठकर हमारे भले की शुभ कामनाएं, यह सारा दृश्य इस दुनिया का ही नहीं लगता परन्तु हे सत्गुरू! आपके हित अनुराग ने यह अद्भुत खेल रचाए। ईसा मसीह को तो एक बार फांसी दी गई, आपने तो हर रोज़ फांसी से अधिक कष्ट सहे। आपके शारीरिक कष्टों को याद करके अपने आप पर शर्म आती है कि हम उस सब का क्या सिला दे रहे हैं?

इसके बाद न केवल आप पर झूठे मुकदमें हुए, परन्तु आपको सताने के लिए, दूसरे स्थानों पर मुकदमें किए गए। कई घण्टे कचहरी में खड़ा रखा जाता बैठने को कुर्सी तक न दी जाती, पेचिश से बेहाल, रात को रहने के लिए बदबूदार सराय का कमरा, आपके देव बोधों पर कितना बड़ा प्रहार! फिर सारी सृष्टि के सरताज खड़े हैं, और नीच जीवनधारी मनुष्य उन पर जिरह करते है, गन्दे इल्जाम लगाते है और नीच जीवनधारी मनुष्यात्मा जज बन कर उन्हें फैसला सुनाते हैं। कैसा दुखदाई दृश्य! आपने यह सब कष्ट उठाकर

कभी पछतावा नहीं किया बल्कि हमारे हित और भलाई के लिए और कमर कस ली। इन सब कष्टों पर विजय पाते पाते आपका देवरूप और चमक गया। आपके नेचर के विकासकारी शक्तियों पर दृढ़ विश्वास ने फतह पाई। हम लोगों का विकासकारी शक्तियों पर ही विश्वास डांवांडोल हो जाता है कि बस अब तो देव समाज का, गुरू के मिशन का भविष्य डांवांडोल है। प्यारे साथियो! गुरू का मिशन हमारे हाथ में नहीं, गुरू महाराज ने मनुष्यों के हाथों सौंपा भी नहीं, गुरू महाराज ने इसे विकासकारी विभाग के हाथों सौंपा है, हम टूटा फूटा ज़रिया बनकर अगर सम्भव हो तो अपना भला कर सकते हैं।

यदि आज लोग शाकाहारी बन रहे हैं, नशों के विरुद्ध महिमें चल रहे हैं, एक पत्नी के जीते जी दूसरी शादी कानून के विरुद्ध घोषित हुई है, खुलमखुल्ला जूए को रोका जा रहा है, रिश्वत लेना कानून के विरुद्ध समझा जाता है, विधवा स्त्रियों को दूसरी शादी करने का अधिकार दिया गया है, लड़कियों को शिक्षा की सुविधाएं मिल रही हैं, यह विकासकारी विभाग की ही देन है, गुरू महाराज की उस समय की विचारधारा, किसी भी माध्यम से फैल रही है यह सत्य है कि दुनिया परम पूजनीय भगवान की आत्मा सम्बन्धी शिक्षा से अनिभिज्ञ है, पर एक दिन यह भी आएगा, जब इस शिक्षा की ज़रूरत पड़ेगी। मिथ्या के जाल कटेंगे, सत्य का राज फैलेगा। यह तो हमारा सौभाग्य होगा, यदि हम अपने नीच जीवन, घमंड, घृणा, स्वार्थ, संसारिकता से ऊपर उठकर इस मिशन में कुछ कील कांटा बन जाएं। एक गलहरी की घटना है, कि जंगल में आग लगी थी, सब पानी डाल रहे थे, एक चिड़िया भी अपनी चोंच में पानी भरकर ले जा रही थी। किसी ने पूछा कि तेरे इस पानी से क्या होगा? तो उसने कहा कि कुछ भी न हो, परन्तु आग बुझाने में अपना हिस्सा डाल रही हूं। इसलिए साथियो! हम चिड़िया ही बन जाएं, मिशन के लिए कुछ तो करें। मैं कर सकूं, आप कर सकें, मेरी ऐसी कामना है।

– सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : – श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

हम क्या कर सकते हैं?

प्यारे धर्म सम्बन्धियों!

मैं इन दिनों यह अनुभव करती रही हूं कि हम मनुष्यात्मा परम पूजनीय भगवान के देव प्रभावों को पाने के बहुत ही कम योग्य हैं, हमारा प्रयत्न भी बहुत कम ही नहीं, न के बराबर है। परम पूजनीय भगवान की इच्छाएं वा आशाएं अपने शिष्यों से बहुत हैं, परन्तु उन तक पहुँचना तो विरले सौभाग्यवान जनों के लिए ही सम्भव है।

मैंने "परम पूजनीय भगवान के चरणों में रहने के दिनों को याद" पुस्तक पढ़ते हुए यह अनुभव किया कि कुछ छोटी छोटी बातें है जो यदि हम अपनी ज़िन्दगी में कुछ न कुछ पूरी करें तो गुरू की शिक्षा के निम्न स्तर तक पहुँच ही सकते हैं।

1. हम आलसी और लापरवाह रहते हैं, अपनी चीजों को ठिकाने पर नहीं रखते, फिर न केवल ढूंढ़ने में समय बर्बाद करते हैं, बल्कि दूसरों पर भी गुस्सा निकालते हैं।

14 अप्रैल 1909 को परम पूजनीय भगवान ने फरमाया था :-

> "अपनी चीज़ों को याद रखने और आवश्यकता के समय उनके ढूंढ़ लेने के लिए आवश्यक हैं कि वस्तुओं को परिपाटी में रखा जाए। एक-2 प्रकार की चीज़ें विशेष नियत स्थानों पर हों। यह मनुष्य की शक्ति में नहीं कि अपनी चीज़ों को अनाप शनाप रखकर उन सब को याद रख सके कि कहां कहां पड़ी हैं और ज़रूरत के समय उनको आसानी से ढूंढ़ सके"

यह देखने में छोटी बात है परन्तु परम पूजनीय भगवान ने जहां आत्मा का सर्वोच्च दान दिया है, वहां नित्य जीवन में हमारे सुधार के लिए भी संग्राम किया है। उनका जीवन हर पहलू में आदर्श था।

एक बार समाज के ज़िम्मेवार लोगों को कोई रसीद नहीं मिल रही थी, तो उन्होंने गुरू महाराज से विनम्र प्रार्थना कि आप देखने की कृपा करें कि कहीं आपके कागज़ों में तो नहीं, पूजनीय भगवान ने अपने नियत स्थान पर देखा और कहा कि नहीं मेरे पास नहीं। उस जन ने प्रार्थना की कि भगवान आप और कहीं देख लें, तो भगवान ने कुछ इस तरह फरमाया कि हम कभी भी नियत स्थान के बिना कोई चीज़ नहीं रखते यदि हम उठ नहीं सकते, तो हम किसी और से नियत स्थान पर रखने के लिए कहेंगे, यदि कोई न हो तो हम घिसट कर जाकर भी उस चीज़ को नियत स्थान पर ही रखेंगे।

ऐसे निराले आदर्श थे हमारे गुरू! हम इस बार की पैरवी करने की तो कोशिश कर ही सकते हैं, फेल होंगे, परन्तु संग्राम करने से धीरे 2 बेहतरी आएगी। गुरू की थोड़ी सी इच्छा को हम पूरा कर पाएंगे।

दूसरी बात जो हम पूरी करने की कोशिश में लग सकते हैं, वह है सफाई। परम पूजनीय भगवान जहां सफाई न हो, उन्हें बहुत दुख पहुँचता था। वह अपनें कमरे को न केवल साफ रखते थे, बल्कि सुसज्जित भी करते थे। एक बार खड़े होकर वह कमरों की सफाई करवा रहे थे, जो भी फालतू समान था, उसी वक्त उसको निकलवाकर नीलाम कर दिया। सुबह 8 बजे से 11 बजे तक अपनी निगरानी में सब काम करवाया। जब तक सारा निवास स्थान बिल्कुल साफ सुथरा नहीं हुआ, उन्हें चैन नहीं आई। अपने कमरे में स्वयं चीज़ों की जगह बदल कर रखते ताकि तबदीली से कमरे में नयापन आता है। गुरू महाराज की प्रबल इच्छा थी कि उनके सेवक फालतू सामान इकट्ठा न होने दें, सफाई ही नही तरतीब भी ज़रूरी है।

हम कुछ न कुछ इस ओर कोशिश कर सकते हैं हमारे घरों में फालतू समान, कपड़ें पड़े रहते हैं, हमारे स्टोर भर जाते हैं, 'क्यों न हम दीवाली पर ही नहीं, हर 1-2 महीने में फालतू समान निकाल दें, जो हमने सालों से इस्तेमाल नहीं किया, उस समान का बन्धन हमें यह करने नहीं देता, हमारी यह अवस्था हमारे गुरू के लिए सन्ताप बन जाती है, उनकी इस खुशी को लेने के लिए हम कुछ कदम बढ़ाएं, कोशिश में तो लगें।

एक बार मेरी एक रिश्तेदार लड़की ने घर का फालतू समान निकालकर गैरेज में रख दिया ताकि किसी को दे सकें। उनके पति एक 2 करके सब उठाकर अन्दर ले आए, हमारा वस्तुओं से बन्धन हमें ऐसा ही बना देता है।

एक बार गुरू महाराज देव समाज के आफिस में अचानक चले गए, वहां देखा कि मेजों पर और दूसरी चीजों पर धूल पड़ी हुई है, गुरू महाराज को जो दुख हुआ, उसका अनुमान मनुष्यात्मा नहीं लगा सकते, उन्होंने गहरे दुःख का प्रकाश किया।

अपने जिम्में के कामों को समय पर वा समय से पहले पूरा करना चाहिए

भगवान ने फरमाया है कि अपने ज़िम्में के कामों को बार 2 याद करना चाहिए, यदि पूरा नहीं कर पाते, तो उसका गहरा दुःख होना चाहिए। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने पूजनीय देव शास्त्र की रचना ऐसे समय में की जब उनका अन्त निकट था, परन्तु देव हृदय की यह पुकार थी कि या यह ग्रन्थ निकलेगा या मेरी लाश निकलेगी। और वह ग्रन्थ मानवता की सर्वोच्च भलाई में उन्होंने बहुत ख़राब सेहत के साथ भी पूरा किया।?

हम अपने ज़िम्में के कामों को जहां तक पूरा करते हैं, वहां तक रत्ती भर तो अपने गुरू की शुभ इच्छा का पालन करते हैं, हमारा आत्म विश्वास भी बढ़ता है।

हम मनुष्यात्मा हैं, अपनी छोटी-2 कमज़ोरियों पर फ़तह पानी भी कठिन है, इसका एक नुस्ख़ा है कि अपने ज़िम्में के कामों को हररोज़ लिख लें, उस अनुसार अपने कृर्तव्य पूरे करें।

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

भगवान ने फरमाया था :-

कर्तव्य बोध की सख़्त ज़रूरत है। जो काम दिया जाए, उसे याद रखो, उसे पूरा करना और ठीक तरह से पूरा करना, बेहतर तौर पर पूरा करना और ठीक समय पर पूरा करना कर्तव्य बोध में दाख़िल है। जो काम दिया जाता है, उसे बार 2 सामने लाना चाहिए। काम कितना भी छोटा क्यों न हो, उसको पूरा करने में बहादुरी है।

"भगवान देवात्मा ने अपने सेवकों और कर्मचारियों से सख़्त आघात पाकर भी उनके भीतर और उच्च भावों के अतिरिक्त कर्तव्य बोध के लिए जो गहरा संग्राम किया, उसका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता"

(श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी)

<u>प्रतिज्ञा पालन –</u>

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जिससे जो भी commitment (प्रतिज्ञा) करते थे, उससे कभी पीछे नहीं हटते थे। एक बार उन्होंने 2 बजे एक स्थान पर कुछ लोगों को सम्बोधन करने जाना था परन्तु उस समय बहुत ज़ोर की बारिश हो गई। जिस स्थान पर जाना था, वह उनके निवास स्थान से दूर था। कर्मचारियों ने बहुत प्रार्थना की कि भगवन! ऐसी धूआंधार बारिश में कोई नहीं आएगा, परन्तु कोई उन्हें रोक नहीं सका, उन्होंने फरमाया कि यदि एक जन भी वहां आ गया तो मैं उसे निराश नहीं कर सकता और ऐसी धूआंधार बारिश में भी वहां पहुँचे, बेशक कोई जन भी वहां नहीं पहुँचा, परन्तु पूजनीय भगवान ने अपनी commitment पूरी की और हमारे सामने एक आदर्श रखा है।

हम तो देव प्रभावों की संगत में सत्संगों में आने की प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु उसे पूरा नहीं करते। दान की प्रतिज्ञा करके भी भूल जाते हैं या बैठे 2 ही ज़्यादा दान करने की सोचकर कम कर देते हैं।

जब कोई प्रतिज्ञा करके पूरा नहीं करता था, तो पूजनीय भगवान को बहुत दु:ख होता था। किसी भी रिश्ते में प्रतिज्ञा करके पूरा करके हम अपने गुरू की थोड़ी सी खुशी प्राप्त कर सकते हैं, ऐसी छोटी 2 बाते हैं। वह फिर देने की कोशिश करेंगे।

-सुरजीत बराड़

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts